महकता संसार

हवा के जरा से झोंके से
दीपक बुझ जाता है,
हवा में घुलकर उड़ जाने से
सारा जहाँ महकता है,
दर्पण जब तक सलामत है
साफ चेहरा दिखता है
बूंदें ओस की गिर जाने से
रूप बदलने लगता है,
जीवन रूपी इस दर्पण को
जो साफ करता रहता है,
उस मानव की छवि में सबको
असली चेहरा दिखता है,
तूफानी हवा और आंधियों में
जो वृक्ष नही उखड़ते है,
वो ही दरख्त हर मानव को
ठंडी छाया भी देते है,
हर मानव को स्वाभिमान से
जीने का अधिकार है,
शुद्ध वायु और खान पान का
जन्मसिद्ध अधिकार है,
मानव के हर अधिकार को
हमे सँजो कर रखना है,
रख मानवअधिकार सुरक्षित
आराम से हमको जीना है,
✍ गोपाल कृष्ण व्यास